अथोदुम्बरः (गूलर) । तस्य नामानि गुणांश्चाह

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ॥ ८ ॥

उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्रजित् । मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः ॥ ९ ॥

गूलर के संस्कृत नाम—उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञाङ्ग और हेमदुग्धक ये सब हैं ।

गूलर—मधुर तथा कषायरस युक्त, शीतल, रूक्ष, गुरु, वर्ण को उत्तम करने वाला, व्रण का शोधन तथा रोपण (घाव भरना) करने वाला एवम्—पित्त, कफ तथा रक्तविकार को दूर करने वाला है ॥ ८-९ ॥

५ गूलर

हि०-गूलर, गुल्लर । बं०-यज्ञ डुमुर । म०-उम्बर, उम्बराचे झाड़ । गु०-उम्बरो, ऊमरडो । क०-अतिमर । अ०-ज़मीज़ । ते०-अति चेट्टु । ता०-अत्तिमरम् । फा०-अञ्जीरे आदम, समर पिस्ता । ले०-*Ficus glomerata Roxb.* (फाइकस् ग्लोमेरॅटा) । Fam. Moraceae (मोरेसी) ।

गूलर इस देश के प्रायः सब प्रान्तों में पाया जाता है । पहाड़ी भूमि और पहाड़ों पर भी इसके वृक्ष पाये जाते हैं ।

इसके वृक्ष ६० फीट तक ऊँचे फैले हुये होते हैं । पत्ते-५-७ इञ्च लम्बे, अण्डाकार, गहरे हरे और चिकने चमकीले होते हैं । फल-१-२ इञ्च व्यास में सटे हुए गुच्छों में लगते हैं । कच्चे फल हरे और पकने पर लाल हो जाते हैं । फलों के भीतर प्रायः छोटे २ कीड़े होते हैं ।

इसके सभी अंगो का उपयोग किया जाता है ।

रासायनिक संगठन—छाल में १४% टैनिन होता है ।

गुण और प्रयोग—इसकी छाल स्तंभन; पक्वफल शीत, स्तम्भन एवं रक्तसंग्राहक; क्षीर शीतल, स्तंभन, रक्तसंग्राहक, पौष्टिक एवं शोथहर है ।

(१) सभी प्रकार के रक्तपित्त के लिये इसके फल तथा छाल का उपयोग किया जाता है । विशेष रूप में, रक्तप्रदर, अत्यार्तव, आसन्न गर्भपात, रक्तमेह आदि में इसको देते हैं ।

(२) मधुमेह में फल या मूल का रस दिया जाता है ।

(३) इसका क्षीर रक्तातिसार में लाभदायक है । बच्चों के आतसार, वमन तथा दौर्बल्य में इसको १० बूंद दूध के साथ देते हैं ।

२८७. उदुम्बर

परिचय

गण—मूत्रसंग्रहणीय, कषायस्कन्ध (च०), न्यग्रोधादि (सु०) क्षीरिवृक्ष, पंचवल्कल (भा०)।

कुल—वट-कुल (मोरेसी-Moraceae)।

नाम—लै०-फाइकस ग्लोमरेटा (Ficus glomerata Roxb.) सं०-उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक (दूध श्वेत किन्तु हवा लगने पर थोड़ी देर में पीला हो जाता है); हि०-गूलर; बं०-यज्ञडुम्बुर; म०-उम्बर; गु०-उम्बरो, उमरडो; ता० मल० कन्न०-अति; ते०-अत्ति; उ०-डिमरी; अ०-जम्भैज; फा०-अंजीरे आदम; अंजीरे अहमक़ ; अं०-क्लस्टर फिग (Cluster fig.), कण्ट्री फिग (Country fig.)।

स्वरूप—इसके **वृक्ष** ३०-५० फीट ऊँचे होते हैं। **छाल**-रक्ताभ धूसर होती है। **पत्र**-३-४ इञ्च लम्बे, लट्वाकार-भालाकार, तीक्ष्णाग्र, तीन सिराओं से युक्त होते हैं। **फल**-१-२ इञ्च व्यास के, प्रायः गोलाकार या शुण्डाकार, बड़े गुच्छों में, निष्पत्र शाखाओं पर लगते हैं। ये कच्चे में हरे तथा पकने पर लाल हो जाते हैं। मार्च-जून में फल लगते हैं। दिसम्बर-जनवरी में नई पत्तियाँ निकलती हैं।

उत्पत्तिस्थान—यह भारत में सर्वत्र होता है।

रासायनिक संघटन—फल में आर्द्रता १३·६, अलब्युमिनायड ७·४, वसा ५·६, कार्बोहाइड्रेट ४६, रंजकद्रव्य ८·५, सूत्र १७·६, भस्म ६·५, सिलिका ०·२५ तथा फास्फोरस ०·६१ प्रतिशत होता है। छाल में १४% टैनिन होता है। दूध में ४-७·४% कॉउचुक (रबड़) होता है।

गुण

गुण—गुरु, रूक्ष
विपाक—कटु
रस—कषाय
वीर्य—शीत

कर्म

दोषकर्म—यह कफपित्तशामक है।

संस्थानिक कर्म-बाह्य—यह शोथहर, वेदनास्थापन, वर्ण्य और व्रणरोपण है।

आभ्यन्तर-पाचनसंस्थान—अग्निसादक, स्तम्भन है। पका फल कृमिकारक है।

रक्तवहसंस्थान—रक्तपित्तशामक है।

प्रजननसंस्थान—गर्भाशयशोथहर और शुक्रस्तम्भन है।

मूत्रवहसंस्थान—मूत्रसंग्रहणीय है।

तापक्रम—दाहप्रशमन है।

प्रयोग

दोषप्रयोग—कफपित्तज विकारों में प्रयुक्त होता है।

संस्थानिक प्रयोग-बाह्य—शोथ, वेदना, व्रण पर दूध लगाते हैं तथा वर्ण विकारों में उदुम्बर के शुंग का लेप करते हैं। पत्रक्वाथ से व्रणप्रक्षालन एवं गण्डूष करते हैं।

आभ्यन्तर-पाचनसंस्थान—रक्तातिसार, प्रवाहिका और ग्रहणी में छाल का क्वाथ देते हैं तथा कच्चे फलों का शाक खिलाते हैं। बच्चों के अतिसार तथा दन्तोद्भेद में दूध देते हैं।

रक्तवहसंस्थान—रक्तपित्त में छाल और फल का प्रयोग करते हैं।

प्रजननसंस्थान—रक्तप्रदर तथा श्वेतप्रदर में छाल का क्वाथ देते हैं। इन रोगों में उत्तरवस्ति भी देते हैं। गर्भपोषणार्थ भी देते हैं। शुक्रदौर्बल्य में दूध का प्रयोग होता है।

मूत्रवहसंस्थान—प्रमेह में छाल का क्वाथ देते हैं और पका फल खिलाते हैं।

तापक्रम—दाहरोग में पका फल देते हैं।

प्रयोज्य अंग—त्वक्, फल, क्षीर।

मात्रा—चूर्ण-३-६ ग्रा०, क्वाथ-५०-१०० मि. लि.; क्षीर-५-१० बूंद।

विशिष्ट योग—उदुम्बरसार।

× × ×

'उदुम्बरः क्षीरवृक्षो हेमदुग्धः सदाफलः। अपुष्पफलसंबद्धो यज्ञांगः शीतवल्कलः॥
कृमिवृक्षो जन्तुफलो मशकी जघनेफलः। पुष्पशून्यः शीतफलः पवित्रः सुप्रतिष्ठितः॥'
'उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्रजित्। मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः॥'

(भा. प्र.)

'औदुम्बरं कषायं स्यात् पक्वं तु मधुरं हिमम्। कृमिकृत रक्तपित्तघ्नं मूर्च्छादाहतृषापहम्॥'

(ध. नि.)

विविध भाषाओं में नाम– सं.- उदुम्बरः, जन्तुफलः, यज्ञाङ्गः, हेमदुग्धकः। हि.- गूलर, गुल्लर, गूलड़। बं.- यज्ञडुमुर। म.- उम्बर, उम्बरांचे झाड़। गु.- उदुम्बरो। क.- अति। अ.- जमीज। ते.- अतिचेट्टू। ता.- अतिमरम। फा.- अञ्जीरे आदम, समर पिस्ता। अं.- Fig tree (फिग ट्री)। ले.- Ficus glomarata (फाइकस ग्लोमेरेटा)।

परिचय ज्ञापिका संज्ञा- क्षीरवृक्ष, सदा फल, जन्तु फल, अपुष्प फल सम्बन्ध, सितवल्कल।

गुण प्रकाशिका संज्ञा- कुष्ठघ्नी।

काकोदुम्बरिकाकी परिचय ज्ञापिका संज्ञा- फल सम्भारी, खरपत्री।

गुण-दोष–

धन्वन्तरि निघण्टु तथा राज निघण्टु के अनुसार- उदुम्बर (गूलर) कषाय रस प्रधान होता है। पक्व उदुम्बर मधुर रस प्रधान है तथा शीतल है। यह कृमि कारक, पित्त रक्त नाशक तथा मूर्च्छा, दाह एवं प्यास को दूर करने वाला है।

राज निघण्टु के अनुसार- पका हुआ गूलर का फल अत्यधिक शीतल है, पित्तनाशक है, मधुर है तथा श्रम एवं शोथ को दूर करने वाला है। कच्चा गूलर कषाय रस प्रधान है तथा अधिक जाठराग्नि दीपक एवं रोचक है; इनके अतिरिक्त मांस को बढ़ाने वाला तथा रक्त विकार को बढ़ाने वाला है।

धन्वन्तरि निघण्टु के अनुसार- काकोदुम्बरिका ग्राही है, कण्डू, कुष्ठ तथा व्रण को दूर करने वाली

है; इनके अतिरिक्त रक्तपित्त को दूर करने वाली, शोथ, पाण्डु तथा कफ को दूर करने वाली है। अन्य भी इसके गुण हैं:- काकोदुम्बरिका पाक में शीतल है, गले के लिए लाभदायक है, अम्ल रस प्रधान तथा कटु रस प्रधान है; इनके अतिरिक्त चर्म विकार, रक्त विकार तथा पित्त का नाशक है और उसका फल अतिसार को दूर करती है।

राजनिघण्टु के अनुसार- पक्व काकोदुम्बरिका शीतल है, अम्ल है तथा कटु है। यह चर्म विकार, पित्त विकार तथा रक्त विकार को नष्ट करने वाली है और उसका छिलका अतिसार को दूर करने वाली है। गूलर का छिलका शीतल है, कषाय रस प्रधान है, व्रण को नष्ट करने वाली है, भारी है, गर्भ के संरक्षण में हितकर है और दूध को बढ़ाने वाली है।

भावप्रकाश के अनुसार- गूलर शीतल है, रूक्ष है, गुरु है, पित्त विकार, कफ विकार तथा रक्त विकार को दूर करने वाला है। मधुर रस प्रधान तथा कषाय रस प्रधान है, वर्णकारक है, व्रण शोधक है तथा व्रणरोपक है। मलपू (काकोदुम्बरिका) स्तम्भकारक है, तिक्त है, शीतल है तथा कषाय रस प्रधान है और यह कफ विकार, पित्त विकार, व्रण, श्वेत कुष्ठ, पाण्डु, अर्श रोग तथा कामला रोग को दूर करती है।

वैद्यक शास्त्र में उदुम्बर का प्रयोग-

(१) श्वित्र (सफेद-कुष्ठ) में उदुम्बर का प्रयोग- श्वित्र में काकोदुम्बरिका के रस में गुड़ मिलाकर पहले स्वेदन करना अभीष्ट है (च.चि.अ.७)। **(२) योनिरोग में उदुम्बर का प्रयोग**- गूलर के दूध के साथ काले तिल को छः बार भावित कर उस तिल तैल को गूलर के क्वाथ में सिद्ध कर उसका योनि रोग में पिचु धारण करे (च.चि.अ.३०)।

रक्त पित्त में उदुम्बर का प्रयोग- उदुम्बर के फल को पीस कर उसका सेवन करे या उसके केवल रस का रक्त पित्त में पान करे (सु.उ.अ.४५)।

(१) अग्निमान्द्य में उदुम्बर के फल का प्रयोग- गूलर के छाल को पीस कर तथा स्त्री का दूध मिलाकर अग्निमान्द्य में पान करे (चक्रदत अग्निमान्द्य चि.)। **(२) रक्तपित्त में काकोदुम्बरिका का प्रयोग**- काकोदुम्बरिका के फल का रस मधु मिलाकर या केवल रस पान करने से शीघ्र ही रक्त पित्त रोग नष्ट होता है (चक्र.रक्तपित्त चिकित्सा)। **(३) पित्तज तृष्णा में पके गूलर के फल का प्रयोग**- पित्तज तृष्णा में पके उदुम्बर के रस का या उसके क्वाथ या उसके हिम का प्रयोग पित्तज तृष्णा को शान्त करता है (चक्र.तृष्णा चि.)।

रक्त प्रदर में गूलर के फल का प्रयोग- गूलर के फल के रस में मधु मिलाकर रक्त प्रदर के नाश के लिए पान करे और शक्कर मिलाकर दूध तथा भात भक्षण करे (भा.म.ख.भा. ४)।

(१) वात व्याधि में काकोदुम्बरिका के दूध का प्रयोग- सभी योगों को जानने वाला चिकित्सक काकोदुम्बरिका के दूध में शुद्ध हींग मिलाकर उससे वात रोग को दूर करे। केवाछ के मूल के चूर्ण का नस्य देकर अवबाहुजन्य पीड़ा को दूर करे (वङ्गसेन वातव्याधि चि.)। **(२) योनि को गाढ़ी करने के लिए उदुम्बर के फल का प्रयोग**- पलास फल तथा उदुम्बर के फल का चूर्ण तिल तैल में मिलाकर लेप करे। इसके पहले शहद से योनि को लेप करे। यह प्रयोग योनि को गाढ़ा (कड़ा) कर देता है (वङ्गसेन-स्त्रीरोग चि.)। **(३) सारमेय (कुत्ता) विष में काकोदुम्बरिका के मूल का प्रयोग**- काकोदुम्बरिका के जड़ का रस तथा धतूर के फल का रस सारमेय के विष को दूर करने के लिए चावल के धोअन के साथ पान करे (बंग.वि.चि.)।